अप्रैल माह का परिचय

१ अप्रैल, २०२१

आत्मीय पाठक,

आख़िरकार, उत्तरी गोलार्ध के अधिकतर क्षेत्रों में वसन्त ऋतु आ ही गई। प्रकृति सूर्य की ऊष्ण किरणों से मन्त्रमुग्ध होकर पुलकित व पल्लवित हो रही है। शीतकाल में जो कुछ भी सुप्त-सा रहता है, वह सब एक बार फिर जाग उठा है। और भूमि रंगों की छटा बिखेरने लगी है। इस माह के आरम्भ में, ४ अप्रैल को ईस्टर का पर्व है जो मेरे आस-पास खिलते नवजीवन व नवीनीकरण के अनुरूप है।

पिछले कुछ महीनों से मैं अरीज़ोना राज्य के सोनोरान रेगिस्तान में रह रही हूँ; यह अमरीका के दक्षिणपश्चिमी भाग में स्थित है। दुनिया के इस कोने में जंगली फूल खिलना शुरू हो रहे हैं। छोटे उल्लू गर्मियों में अपना घर बनाने मेक्सिको से उड़कर यहाँ आ गए हैं। रोगिस्तानी कछुए अपने बिलों से बाहर आ गए हैं; तितलियों की गतिविधि बढ़ रही है। जिन पेड़ों पर फलियाँ लगती हैं, उनमें खाने योग्य फल आ रहे हैं। सगुआरो कॅक्टस यानी नागफनी अपने बड़े सफ़ेद फूल खिलाने की तैयारी कर रहा है। और जल्द ही सफ़ेद पंखों वाले कबूतर वापस आ जाएँगे।

दक्षिणी गोलार्ध के भागों में, ग्रीष्म ऋतु की ऊष्मा सर्द दिनों में बदल रही है। दिन छोटे हो रहे हैं और रातें लम्बी। पतझड़ में पेड़ों के पत्ते झड़ने लगे हैं। प्रकृति शान्त हो रही है और अल्प विराम लेने की तैयारी में है जिससे शीत ऋतु आने पर वह अन्तर की ओर मुड़ सके।

सब कुछ देखने पर भी जो चीज़ मुझे सबसे अधिक चकित करती है वह है प्रकृति का लचीलापन और उसकी क्षमता जिससे कि वह शीत ऋतु में सर्दियों व ग्रीष्म ऋतु में चिलचिलाती गर्मी के अनुसार और भीषण सूखे व मूसलाधार वर्षा के अनुरूप स्वयं को ढाल लेती है। प्रकृति अपने अनगिनत रूपों में स्वयं को विस्तृत या संकुचित कर लेती है। वह कभी निष्क्रिय नहीं रहती; वह लगातार स्वयं को पुनर्नवीन करती रहती है, नवजीवन का संचार करती रहती है।

साधना भी ऐसी ही सक्रिय प्रक्रिया है। अपनी उच्चाकांक्षाओं को नवीन करते समय, अपने संकल्पों को अभिव्यक्त करते समय और सिद्धयोग के अभ्यासों को करने के अपने प्रयत्नों को दृढ़ बनाते समय, हम अपने जीवन को स्फूर्ती, बल व प्रेरणा से भर देते हैं। यह मेरा अपना व्यक्तिगत अनुभव है कि लगातार अपनी साधना का निरीक्षण करने, जो सुधार करने हैं उनके अनुकूल फेरबदल करने और

अपने प्रयत्नों को और भी मज़बूत करने से मैं सम्मानपूर्वक व सेवा अर्पित करते हुए अपने जीवन को बेहतर रूप से जी सकती हूँ।

इस वर्ष के आरम्भ में मैंने निश्चय किया कि मैं अपने अभ्यासों को पुनः नवीन करूँगी। हर माह मैं सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट किए गए एक स्तोत्र का अध्ययन करूँगी। हर स्तोत्र भगवान के साथ, मन्त्रमुग्ध कर देने वाला संवाद है जिसकी रचना उन्होंने की है जो स्वयं परमानन्द व कृतज्ञता से भरे हैं।

अप्रैल माह में आने वाली श्रीहनुमान जयन्ती की तैयारी करने के लिए पिछले माह मैंने यह निश्चय किया कि मैं श्रीहनुमान चालीसा सीखूँगी व उसका अभ्यास करूँगी। मैं रोज़ सुबह कई बार यह स्तोत्र गाती और जब मैं ऐसा कर रही होती तो इसके मन्द सुमधुर स्वर मुझे मन्त्रमुग्ध कर लेते। मुझे ऐसा लगता कि मैं अपने ही बल में मृदुलता से स्थित हो रही हूँ, मेरा आसन अधिक सीध में है और मैं खुलकर श्वास ले रही हूँ। मैंने ऋषि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण का सुन्दर संक्षिप्त भाषान्तर भी पढ़ा जिससे कि मैं भगवान राम के प्रति हनुमान जी की अविचल भक्ति की कथा से सुपरिचित हो सकूँ। वानरवीर हनुमान, पवन सुत हैं। वे प्रकृति का ऐसा दिव्य बल हैं कि वे जहाँ भी जाते हैं वहाँ धर्म व नीति की पुनःस्थापना करते हैं। इस कथा में एक प्रसंग है जिसमें भगवान की सेवा करते समय हनुमान जी अपने कन्धे पर सम्पूर्ण पर्वत उठाकर कई महाद्वीप लाँघ जाते हैं।

हर रोज़ अपनी खिड़की से बाहर देखते समय मैं सैंटा कैटालीना के पहाड़ों के आमने-सामने होती हूँ; ये विशालकाय मोनोलिथ्स् पर्वत आसमान को छूते हैं और मीलों तक फैली धरती पर राज करते हैं। पर्वत की ये चोटियाँ देखकर मैं दंग रह जाती हूँ। कभी-कभी सूरज उन पर स्वर्णिम और नारंगी रंग बिखेरता है; तो कभी ये पर्वत आक्रामक-से लगते हैं मानो ऐसा पूर्वाभास करा रहे हों कि कुछ अनिष्ट होने वाला है। उनकी संगति में मुझे धरती और इस पर रहने वाले समस्त जीवों से एक जुड़ाव महसूस होता है।

आज इन पर्वतों को देखकर और श्रीहनुमान के बारे में मनन करके, मुझे ऐसा लगता है कि मैं जानती हूँ कि उन्हें पर्वत उठाने की शक्ति कहाँ से मिली। वह है भगवान राम के प्रति उनका प्रेम, जिनका दिव्य नाम हनुमान जी के रोम-रोम में गूँजता है। इसी विचार के साथ, मैं अपनी आँखें बन्द कर लेती हूँ और उस प्रेम की ओर मुड़ जाती हूँ जो मेरी परमप्रिय श्रीगुरु, श्रीगुरुमाई की अनुकम्पा से मेरे अन्दर जाग्रत हुआ है।

***

इस माह के मुख्य पर्व व कार्यक्रम जिनके बारे में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट दिखाए जाऐंगे, उनमें से कुछ के बारे में मैं यहाँ बताती हूँ।

अप्रैल में होने वाले पर्व व कार्यक्रम

गुढीपाडवा : १२ अप्रैल [भारत में १३ अप्रैल]

गुढीपाडवा को महाराष्ट्र व भारत के अन्य भागों जैसे कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश और मणिपुर में नववर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है [यहाँ इस दिन को 'उगादी', 'युगादी' और 'चेटी चण्ड' के नाम से जाना जाता है।]। गुढीपाडवा पर लोग गुढी यानी चटकीले रंगों के ध्वजा सजाते हैं जो भगवान राम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटने और उनके राज्याभिषेक का उत्सव मनाने के लिए किया जाता है। गुढीपाडवा को वर्ष के साढ़े-तीन सबसे मंगलमय दिनों में से भी एक माना जाता है।

Earth day [अर्थ डे यानी पृथ्वी को समर्पित दिन] २०२१ : २२ अप्रैल

'अर्थ डे' [अंग्रेज़ी में पृथ्वी को Earth [अर्थ] कहते हैं] यानी पृथ्वी को समर्पित दिवस की स्थापना इक्यावन वर्ष पूर्व, सन् १९७० में की गई थी और आज के दिन हर साल करोड़ों लोग 'अर्थ डे' के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं जिसके कारण यह विश्व का सबसे भव्य सामाजिक कार्यक्रम बन गया है। यह महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हमारे लिए एक अवसर है जब हम ठहरकर उस प्राकृतिक जगत की भव्यता के बारे में विचार कर सकते हैं जो हमें पोषित करता है, और साथ-ही हम भगवान के इस संसार का संरक्षण करने में हमारी जो भूमिका है, उसका सम्मान कर सकते हैं।

हनुमान जयन्ती :२६ अप्रैल [भारत में २७ अप्रैल]

इस पर्व पर हम भगवान श्रीराम के अमर, निष्ठावान सेवक, श्रीहनुमान का जन्मोत्सव मनाते हैं। सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर आप इस पर्व का विवरण पढ़ सकते हैं और हनुमान जी से जुड़ी कहानियों व तस्वीरों को देख सकते हैं जिनकी अविचल भक्ति ने उन्हें अजेय योद्धा और बल, बुद्धि व शौर्य का मूर्तरूप बना दिया। इस दिन परम्परागत तौर पर सन्त-कवि तुलसीदास जी द्वारा रचित लोकप्रिय व परमपुनीत स्तोत्र, श्रीहनुमान चालीसा का पाठ किया जाता है, जिसका मैं अध्ययन करती रही हूँ। इसके एक श्लोक में तुलसीदास जी घोषित करते हैं कि महावीर हनुमान का स्मरण करने व उनका आवाहन करने से सभी बाधाएँ मिट जाती हैं और सभी दुःख दूर हो जाते हैं।

***

इस माह आपके लिए मेरी मंगलकामना है कि आप उन अनूठे तरीक़ों का अनुभव कर सकें जिनसे भगवान इस प्राकृतिक जगत में स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। जिस प्रकार प्रकृति स्वयं को निरन्तर नवीनता व ऊर्जा से भरती है, उसी प्रकार आप भी अपनी साधना को स्फूर्ति व आनन्द से पूरित कर सकें।

आदर सहित,
मेनकी क्लार्क

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।